मॉड्यूल - 3

रेखांकन और चित्रकला में उपयोग की जाने वाली विधि और सामग्री

12. भारतीय कला में फ्रैस्को एवं टेंपरा
13. सूखे माध्यमों से चित्रण एवं रेखांकन
14. भित्तिचित्र एवं छापाचित्र

12

भारतीय कला में फ्रैस्को एवं टेंपरा

पिछले अध्याय में आपने समकालीन कला एवं कलाकारों के बारे में जाना। प्रस्तुत पाठ में हम भारतीय कला में फ्रैस्को एवं टेंपरा माध्यम के बारे में जानेंगे। प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य प्रकृति के बहुत निर्भर था। उसके जीवन की संपूर्ण झाँकी उस काल की कलाकृतियों में स्पष्ट दिखाई पड़ती है। उसके चित्रों के मुख्य विषय धनुष-बाण लिये हुए, एक-दूसरे से युद्ध करते हुए, भयंकर पशुओं को शिकार करते हुए, विजय-उत्सव पर ढोल और मृदंग बजाकर नृत्य करते हुए लोग हैं। इस तरह के अनेकों चित्र कलाकारों ने कन्दराओं की विशाल चट्टानों पर चित्रित किये हैं। प्राचीन कलाकृतियों में पशुओं को देवताओं के साथ दर्शाया है। कुछ चित्रों में मानव ने पशुओं के गुणों से प्रभावित होकर उसको पूजनीय तथा उच्च स्थान प्रदान किया है। भारत में प्रागैतिहासिक शैलचित्र तब प्रकाश में आए जब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के आर्चीबालड कार्लाइल ने शैलचित्रों की खोज की, जिनके बारे में उनका मानना था कि वे चित्र 1867 और 1868 में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के सोहागीहाट में पाषाण युग के थे। वे चित्र आज एक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, उन लोगों का जीवन जिन्होंने उन्हें चित्रित किया। सन् 1881 में जे. कॉकबर्न को मिर्जापुर क्षेत्र में केन नदी की घाटी में जीवाश्म गैंडे की हड्डियाँ मिलीं। साथ ही रोप गाँव के पास एक आश्रय स्थल में तीन लोगों द्वारा शिकार किए गए गैंडे की एक पेंटिंग भी मिली। सन् 1924 में सर जॉन मार्शल, राय बहादुर दयाल सहनी, माधोसरूप वत्स, राखेल दास बनर्जी और डॉक्टर मैके ने सिन्धु और रावी नदी के तट पर हजारों वर्ष पहले की सभ्यता की खोज की। इस खोज में विभिन्न बर्तन, मुद्रा, पात्र, मूर्तियाँ आदि वस्तुएँ प्राप्त हुईं। मुद्राओं पर पशुओं की आकृति मिलती हैं।

आज उपलब्ध प्राचीन भारतीय गुफा चित्रों का अगला सेट जोगीमारा, बाग, बदामी, सितनवासल, अरमामलाई और अजंता के भित्तिचित्रों का मुख्य विषय बुद्ध का जीवन और जातक कथाएँ हैं जो बादामी में ब्रह्मणवादी हिंदू धर्म और सितनवाल में जैन विषयों से संबंधित हैं और चित्रित हैं। ये सर्वोत्तम गुणवत्ता के प्रतिनिधि कार्य हैं। इन चित्रों की भावपूर्ण आकृतियाँ विश्व की महत्वपूर्ण कलाकृतियों में अद्वितीय स्थान रखती हैं। इन चित्रों में हाथों की मुद्राएँ, आँखों की चितवन और

अंगों की भंगिमा के अनेक रूपों को दर्शाया गया है। यह युग इतिहास में कला का स्वर्णयुग माना जाता है। इस काल में अधिकतर भित्ति-चित्रण हुआ है।

अजंता में 29 गुफाएँ हैं। इन गुफाओं के चित्र भिन्न-भिन्न कालों के हैं। इनमें ईसा से प्राय: सौ वर्ष पहले से लेकर ईसा बाद सातवीं सदी तक के चित्र हैं। इन गुफाओं में चित्र, बौद्ध धर्म संबंधित हैं। बुद्ध के जीवन से प्रभावित होकर और जातक कथाओं पर आधारित चित्र भित्तियों पर उतारे गए हैं। ये चित्रित गुफाएँ बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान मानी जाती हैं। इन चित्रों को बनाने का उद्देश्य यह है कि वहाँ ठहरने वाले लोग बुद्ध के जीवन की घटनाओं को देख-समझकर उसे अपना आदर्श बना सकें। अजंता के कलाकारों ने अलंकरण में बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। फूल, पशु-पक्षी, गंधर्व, विद्याधर, युगल देव सभी नायक-नायिकाएँ जीवंत दिखाई देते हैं। चित्रों में अद्‌भुत कोमलता है। अजंता का प्रत्येक चित्र अपने आपमें महत्वपूर्ण है। फिर भी पदमपाणि बौद्धिसत्व, माता और राहुल, छंदन्त जातक, क्रूर ब्राह्मण की कथा, जातक, गजराज की जल-क्रीड़ा, पक्षियों का उल्लास, नन्द का पलायन आदि अनेक चित्र संसार के सुंदरतम चित्रों में स्थान रखते हैं। अजंता की अपनी शैली है जो संसार की अन्य सभी शैलियों से भिन्न है। इस प्रकार अजंता शैली के समस्त चित्रों में कलाकार ने वात्स्यायन के कला के छह अंगों का पालन किया है। फिर भी कलाकार किसी निश्चित सीमा में बंधकर संकुचित नहीं हुआ और चित्रकार ने अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सर्वोपरि महत्व प्रदान किया। अजंता की चित्रकला आज भी अपनी विशेषताओं के कारण कला-जगत में एक उज्ज्वल उदाहरण बनी हुई है। अजंता के कलाकारों ने स्त्रियों को सुकोमल लतिका के समान लचकदार भंगिमाओं में अंकित किया है।

अजंता में गिने-चुने प्राकृतिक खनिज रंगों का प्रयोग हुआ है। यहाँ चित्रों में जिन रंगों का प्रयोग हुआ है, उनमें सफ़ेद, लाल, भूरा, नीला, हरा तथा उनके विभिन्न हलके एवं गहरे रंगों का प्रयोग हुआ है। स्थानीय हरे रंग टेराबर्ट (glauconite) का प्रयोग किया गया है, जो थोड़ा मैला होता है। नीले रंग के लिये फारस से मँगाया हुआ बहुमूल्य पत्थर लेपिसलाजुली (Lapis-Lazuli) का प्रयोग विशेष रूप से किया है। सफ़ेद रंग को खड़िया या चूने से बनाया गया है। लाल और भूरा रंग लौह से प्राप्त है। पीले रंग के लिये पीले गेरू, गहरे लाल के लिये चुकंदर का प्रयोग हुआ है। सुनहरे पीले रंग के लिये प्राकृतिक रूप में संखिया से उपलब्ध पीले रंग का प्रयोग हुआ है। रंगों को चावल के मॉड के साथ तरल जल में घोला जाता था।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- भारतीय चित्रकला के भित्ति-चित्रों पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- प्रौगतिहासिक शैल चित्रों के बारे में समझा सकेंगे;
- भित्ति-चित्र तैयार करने की विधि को प्रस्तुत कर सकेंगे;

- अजंता के चित्र किन कथाओं पर आधारित हैं, यह उल्लेख कर सकेंगे;
- अजंता में प्रयोग किए हुए रंगों का वर्णन कर सकेंगे;
- जातक कथाओं का नाम प्रस्तुत कर सकेंगे;
- 'छद्दंत' का वर्णन कर सकेंगे।

12.1 भित्ति-चित्रण (Fresco Painting)

आइए, अब फ्रैस्को तकनीक के बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

दीवार पर की जाने वाली चित्रकारी भित्ति-चित्रण कहलाती है। इस पद्धति में गीले चूने के प्लास्टर पर केवल पानी या चूनायुक्त पानी रंगों में मिलकर चित्रण किया जाता है। गीले प्लास्टर से धीरे-धीरे नमी उड़ जाती है और चूना हवा से रासायनिक क्रिया करके चित्र की सतह पर कैल्शियम कार्बोनेट की पतली चमकदार झिल्ली बना देता है। जिससे रंग स्थायी हो जाते हैं।

चूना - चूने को मिट्टी के बर्तन में कुछ समय के लिए भिगो दिया जाता है, जिससे चूने के अशुद्ध तत्त्व नीचे बैठ जाते हैं। इस भीगी अवस्था में चूना कई महीनों तक रह सकता है। जितना पुराना चूना होता है, उतना ही मुलायम और चिकना हो जाता है।

संगमरमर का चूर्ण - नदी की रेत में मिट्टी तथा अभ्रक की मात्रा अधिक होती है जिससे प्लास्टर चटक सकता है, इसलिए संगमरमर का चूर्ण अधिक उपयुक्त रहता है।

दीवार - भित्ति-चित्र बनाने के लिए जिस आधार का निर्माण किया जाता है उसे दीवार या भित्ति कहा जाता है। दीवार का चयन करते समय कई बातों पर ध्यान देना होता है :

(क) वह वहाँ हो जहाँ हवा का उचित प्रवाह हो।

(ख) दीवार के आस-पास सीलन नहीं होनी चाहिए।

(ग) दीवार में कोई दरार नहीं होनी चाहिए।

(घ) दीवार नई नहीं होनी चाहिए। यदि छत पर चित्र बनाने हों तो छत के पास रोशनदान हों, जिससे वायु का आवागमन ठीक प्रकार हो सके।

भित्ति-चित्रण में प्रयोग होने वाले रंग एवं उन्हें तैयार करने की विधि

भित्ति-चित्रण में रंगों का प्रयोग सीमित होता है। चूना सफ़ेद रंग के लिये प्रयोग में लाया जाता है। चूना ही सभी रंगों को जोड़ने का कार्य भी करता है। भारतीय परंपरा के अनुसार रामराज, हिरमिच, हिगुंल, गेरू, नील, तिल्ली के तेल से बना काजल अथवा कोयले का चूर्ण भित्ति-चित्रण के प्रमुख रंग हैं।

रंगों को पत्थर पर घिसकर, छानकर, निथारकर गीली अवस्था में रखा जाता है। हिंगुल, सिंदूर आदि को भेड़ के दूध में घोंटकर नींबू के रस से शुद्ध किया जाता है।

चित्र 12.1: मरणासन्न राजकुमारी

शीर्षक	:	**मरणासन्न राजकुमारी**
माध्यम	:	टेंपरा
रचनाकाल	:	पाँचवीं सदी ईसवी
स्थान	:	अजंता (महाराष्ट्र)
कलाकार	:	अज्ञात

सामान्य विवरण

अजंता की बेहतरीन चित्रों में से एक 'द डाइंग प्रिंसेस', बुद्ध के भाई, नंद की पत्नी सुंदरी के अंतिम क्षणों का प्रतिनिधित्व करती है, जिसने उसे भिक्षु बनने के लिए छोड़ दिया था। यहाँ भावनाएँ और करूणा शरीर के नियंत्रित मोड़ और संतुलन, हाथों और आँखों के भावपूर्ण इशारों द्वारा व्यक्त की जाती हैं। मरणासन्न राजकुमारी एक तख्त के सहारे लेटी हुई है और एक महिला परिचारिका ने उसे पकड़ रहा था। राजकुमारी का झुका हुआ सिर उनकी झुकी हुई आँखें, झुके हुए अंग और उदास, तनावग्रस्त परिचारिकाएँ; सभी आसन्न मृत्यु की और संकेत करते हैं। यद्यपि उसके पति ने उसे छोड़ दिया है, इसके बावजूद अपने अंतिम क्षणों में मरणासन्न राजकुमारी अत्यधिक चिंतित परिचारकों से घिरी हुई है।

पीछे खड़ी एक दासी अपनी छाती पर हाथ रखे है और दूसरे हाथ से पंखा झल रही है। साथ के एक अन्य प्रकोष्ठ में दो परिचारिका खड़ी हैं, जिनमें से एक पारसी टोपी पहने हुए है दूसरी युवती के बाल नीग्रो जैसे हैं। जो शायद कुछ माँग रही है। एक परिचारिका इस महिला की नाड़ी देख रही है। उसके चेहरे पर मृत्यु के आतंक की एक विषादमय छाया है। नायिका की आँखों से मृत्यु की व्यथा स्पष्ट झलक रही है।

पाठगत प्रश्न 12.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

1. 'मरणासन्न राजकुमारी' का चित्र कौन सी गुफा में है-

   (i) गुफा संख्या 1 (ii) गुफा संख्या 2

   (iii) गुफा संख्या 5 (iv) गुफा संख्या 16

2. 'मरणासन्न राजकुमारी' का माध्यम क्या है-

   (i) टेंपरा (ii) वाश तकनीक

   (iii) कागज की स्याही (iv) इनमें से कोई नहीं

12.2 राजकुमार और राजकुमारी

प्रिय शिक्षार्थी, आइए अब टेंपरा माध्यम के एक भित्ति-चित्र को समझते हैं।

बुनियादी सूचना

यह भित्ति-चित्र धर्मा राजकुमार वेसंतारा की कहानी को दर्शाने वाली कई भित्ति चित्रों में एक है। इस पैनल में विश्वनाथ एक महल के मंडप में अपनी व्याकुल पत्नी को सांत्वना देते नजर आ रहा है। पास ही एक रानी, अपनी अनुचरों के साथ, अचूक गरिमा की मुद्रा में खड़ी है और उनके ऊपर की खिड़की दो महिलाओं को ध्यानमग्न मुद्रा में दिखाती है। वास्तुशिल्प विवरण, द्वितीयक आकृतियों के चेहरे के भाव; वास्तव में, प्रेम के एक विलक्षण सुंदर चित्र बनाते हैं। चेहरे की विशेषताओं का अच्छा संतुलन तीखी नजर और हाथ के इशारे, समृद्ध आभूषण और शानदार कपड़ों की सजावट अजंता स्कूल की विशेषता है।

शीर्षक	:	**राजकुमार और राजकुमारी**
माध्यम	:	मिट्टी के प्लास्टर पर प्राकृतिक रंग (टेंपरा)
रचनाकाल	:	छठी शताब्दी ईसवी
स्थान	:	अजंता, गुफा संख्या-17 (महाराष्ट्र)
कलाकार	:	अज्ञात

चित्र 12.2: राजकुमार और राजकुमारी

सामान्य परिचय

सत्रहवीं गुफा में एक भित्तिचित्र है, जिसमें राजकुमार वेसंतरा के जीवन का एक महत्वपूर्ण दृश्य दर्शाया गया है जहाँ वह अपनी पत्नी से कह रहे हैं कि शुभ सफ़ेद हाथी देने के कारण उन्हें राज्य से निष्कासित कर दिया गया है। अपने पिछले जीवन में बुद्ध एक उदार राजकुमार वेसंतरा थे जिनका विवाह माद्री नामक एक सुंदर राजकुमारी से हुआ था। उनके पास एक सफ़ेद हाथी था जो राज्य के लिए शुभ माना जाता था। एक दिन, जब पड़ोसी राज्य का एक प्रतिनिधिमंडल उनसे मदद मांगने आया क्योंकि वे सूखे का सामना कर रहे थे, तो वेसंतारा ने उन्हें सफ़ेद हाथी दिया ताकि इससे उनके राज्य में बारिश हो सके। इससे विश्वनाथ के राज्य के लोग क्रोधित हो गए, जिन्होंने उनके पिता से राजकुमार को राज्य से बाहर निकालने के लिए कहा।

पाठगत प्रश्न 12.2

1. अजंता के चित्र किन कथाओं पर आधारित हैं?
2. राजकुमार वेसंतरा को उनके राज्य से क्यों निकाला गया?
3. 'राजकुमार और राजकुमारी' का चित्र कौन-सी गुफा में बना हुआ है?
4. 'राजकुमार और राजकुमारी' चित्र किस तकनीक से बना है?

12.3 मार विजय

आइए, अब एक अन्य चित्र 'मार विजय' के विषय में जानें।

बुनियादी सूचना

'मार विजय' के चित्रण में कलाकार ने अपनी पूर्ण योग्यता का परिचय दिया है। इस चित्र का अधिकांश भाग नष्ट हो चुका है। इस चित्र का संबंध उस घटना से है जब भगवान बुद्ध निर्वाण प्राप्ति के समीप पहुँच गए थे। उसी समय कामदेव ने उन्हें तप से डिगाने का प्रयास किया। इस चित्र में जहाँ अनेक कामुकतापूर्ण, भयंकर एवं क्रूर आकृतियाँ चित्रित हैं; वहीं तपस्या करते भगवान बुद्ध ध्यान-मुद्रा में लीन बैठे हैं। एक लाल बौना उनको आँखे फाड़कर डराने का प्रयत्न कर रहा है। एक भयानक आकृति तलवार चला रही है। इसी प्रकार बहुत-सी आकृतियाँ बुद्ध को तप से डिगाने का काम कर रही हैं। एक स्त्री को क्षमा-याचना के रूप में चित्रित किया गया है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि उसे अपनी गलती का एहसास हो रहा है।

चित्र 12.3: मार विजय

शीर्षक	:	**मार विजय**
माध्यम	:	मिट्टी के प्लास्टर पर प्राकृतिक रंग (टेंपरा)
रचनाकाल	:	पांचवीं शताब्दी ईसवी
स्थान	:	गुफा-1, अजंता (महाराष्ट्र)
कलाकार	:	अज्ञात

सामान्य विवरण

यह चित्र 12 फुट ऊँचा और 8 फुट चौड़ा है। यह चित्र जातक कथाओं पर आधारित है। जातक कथाएँ महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ हैं। जिसे उन्होंने स्वयं अपने उपदेश में सुनाया है और बताया है कि वे कई जन्मों से इसी प्रकार अवतीर्ण होते आ रहे हैं। इस चित्र को देखकर भगवान बुद्ध की आंतरिक सौम्यता और शांति के दर्शन हो रहे हैं। इस चित्र में हस्त मुद्राएँ और नेत्र के भाव उल्लेखनीय हैं। चित्र की रेखाएँ सुडौल और शक्तिशाली हैं। विशेष रूप से कुरूप चेहरे, गंजे सिर और बुद्ध को डराने का प्रयोग करती आकृतियाँ कलाकार की अपनी पैनी दृष्टि का परिचय देती हैं। अजंता में कलाकार ने सुंदरता में ही रुचि का प्रदर्शन नहीं किया, बल्कि भयानक कुरूप रूपों के अंकन में भी यह चित्र उल्लेखनीय है।

पाठगत प्रश्न 12.3

1. 'मार विजय' का क्या तात्पर्य है?
2. 'मार विजय' का चित्र किस गुफा में है?
3. 'मार विजय' के चित्र में भगवान बुद्ध किस मुद्रा में हैं?

क्रियाकलाप

एक आर्ट गैलरी पर जाइए। वहाँ टेंपरा माध्यम के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त कीजिए और टेंपरा माध्यम के दो चित्र या तस्वीरें खींचिए। अब A4 साइज के कागज पर ये चित्र चिपकाइए और टेंपर माध्यम के बारे में संक्षेप में लिखिए।

12.4 बैलों की लड़ाई

आप जानते हैं कि अजंता के भित्ति चित्र कला के महत्वपूर्ण नमूने हैं। आइए टेंपरा माध्यम के ही और चित्र 'बैलों की लड़ाई' के बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

अजंता का कला मण्डप आलेखनों से सुसज्जित है। खंभों, दीवारों, छतों, आँगन और महराबों पर बुद्ध से जुड़े दृश्यों और रूपांकनों से चित्रित है। इन आलेखनों में कलाकारों ने मानव, पशु, पक्षी,

हाथी, बेल, फल-फूल को कलात्मक रेखाओं से आलेखनों में प्रयोग किया है। इन आलेखनों का संयोजन विधिपूर्ण है। अजंता के चित्रकार समकालीन जीवन के सभी पहलुओं से परिचित थे, उन्होंने देहाती जीवन की तरह ही दरबारी दृश्यों को भी उतनी ही कुशलता से चित्रित किया है। उन्हें गतिशील आकृतियाँ चित्रित करने में आनंद आता था। गुफा एक में एक कोष्ठक पर चित्रित लड़ते हुए बैल अजंता के उस्तादों की कला का एक उदाहरण है।

शीर्षक	:	**बैलों की लड़ाई**
माध्यम	:	टेंपरा
रचनाकाल	:	पांचवीं शताब्दी ईसवी
स्थान	:	गुफ़ा-1, अजंता (महाराष्ट्र)
कलाकार	:	अज्ञात

चित्र 12.4: बैलों की लड़ाई

सामान्य विवरण

इस चित्र में लड़ने वाले सांडों के बल और शक्ति को दर्शाया गया है। उनका सुंदर सुडौल शरीर, नुकीले सींग, उठी हुई पूँछ और बड़े कूबड़ उसकी पहचान है। झुंड के नेता के रूप में उसके सींग बँधे हुए है, और खुर भूमि को रगड़ रहे हैं। उसके नथुने आक्रामक रूप से भड़क उठे है। अजंता के कलाकार ने अन्य सभी चित्रों को अलग-अलग रंग में रंगा है और बैल पशुओं के चित्रण को पुष्ट और सजीव करने के लिए उसकी पूँछ और पैरों को चित्रित किया है। विभिन्न मुद्राओं में, दर्शक लड़ाई की पशु शक्ति को महसूस कर सकें। यहाँ रेखाओं का प्रवाह रचना की उल्लेखनीय विशेषता है।

पाठगत प्रश्न 12.4

1. 'बैलों की लड़ाई' का चित्र कहाँ स्थित है?
2. 'बैलों की लड़ाई' को देखकर क्या प्रभाव पड़ता है?
3. 'बैलों की लड़ाई' एक महत्वपूर्ण चित्र क्यों है?

आपने क्या सीखा

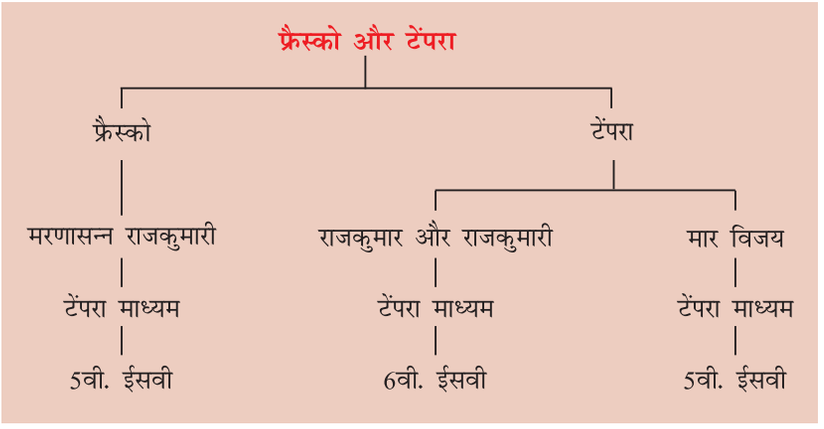

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी -

- प्राकृतिक रंग का उपयोग कर चित्र बनाते हैं।
- अपने घर में उपलब्ध किसी भी वस्तु पर फ्रैस्को तकनीक का उपयोग करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. 'भित्ति-चित्रण' किसे कहते हैं?
2. 'मरणासन्न राजकुमारी' पर एक लेख लिखिए।
3. गुफा न. 1 में खंभे पर बने 'बैलों की लड़ाई' के चित्र की व्याख्या कीजिए।
4. भारत की चित्रकला में प्रथम शताब्दी से सातवीं शताब्दी तक गुफा चित्रों के उदाहरण कहाँ-कहाँ उपलब्ध हैं? उल्लेख कीजिए।
5. अजंता में बने 'मार विजय' नामक चित्र का विवरण लिखिए।
6. अजंता में बने 'राजकुमार और राजकुमारी' नामक चित्र का वर्णन कीजिए।

7. चित्र में राजकुमारी की क्या हालत है?
8. अजंता के भित्ति-चित्रों की प्रमुखा विशेषताएँ लिखिए।
9. 'मार विजय' का आकार लिखिए।
10. 'मार विजय' में बौना क्या करने का प्रयास कर रहा है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

1. (पअ) गुफ़ा संख्या 16
2. (प) टेंपरा माध्यम

12.2

1. अजंता के चित्र जातक कथाओं पर आधारित हैं।
2. क्योंकि वे बहुत ही ज्यादा दयालु थे। उन्होंने अपना सबसे कीमती हाथी धर्म के नाम पर दान दे दिया था।
3. राजकुमार विश्वन्तरा और राजकुमारी मादरी का चित्र सत्रहवीं गुफा में बना हुआ है।
4. राजकुमार विश्वन्तरा और राजकुमारी मादरी का चित्र टैम्परा में बना है।

12.3

1. 'मार विजय' का तात्पर्य है- भगवान बुद्ध का अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना।
2. 'मार विजय' का चित्र अजंता की गुफा नं. 1 में है।
3. 'मार विजय' के चित्र में भगवान बुद्ध तपस्या करते 'ध्यान मुद्रा' में लीन बैठे हैं।

12.4

1. 'बैलों की लड़ाई' का चित्र गुफा संख्या एक का खंभे के ब्रैकट पर बना है।
2. अजंता में छत, खंभों, दीवारों एवं मेहराबों पर चित्रण हुआ है।
3. बैलों की लड़ाई' एक महत्वपूर्ण चित्र है क्योंकि यह अजंता के चित्रकारों को दर्शाता है।

शब्दकोश

भंगिमा	चेहरे का भाव
पुनरावृत्ति	बार-बार दोहराना
लीन	खोये हुए